20 फरवरी, 2018 को भारतीय दूतावास, टोक्यो में आयोजित बिहार स्टेट : इन्वेस्टमेंट प्रमोशन संगोष्ठी में मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार का संबोधन

महामहिम, सम्मानित नेतागण, देवियों और सज्जनों,

इस कार्यक्रम में उपस्थित आप सभी प्रबुद्धजनों को सम्बोधित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इस निवेश प्रोत्साहन संगोष्ठी के आयोजन के लिए मैं जापान सरकार, भारत सरकार के विदेश मंत्रालय तथा जापान में भारतीय दूतावास को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। इस कार्यक्रम के माध्यम से मुझे और मेरे प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों को बिहार के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराने का अवसर प्रदान करने के लिए भी मैं आप सभी का आभार प्रकट करता हूँ।

मैंने जापान की इस यात्रा का निमंत्रण इसलिए स्वीकार किया क्योंकि मैं जापान की अद्भुत आस्था, संस्कृति और चकित करने वाली प्रगति से प्रेरित हूँ और साथ ही मैं बिहार के सामर्थ्य और संभावित अवसरों को भी साझा करना चाहता हूँ। हमने बिहार की अर्थव्यवस्था में गतिशीलता और समग्रता को समाहित किया है और राज्य का विकास दर भारत में सबसे तेजी से बढ़ते राज्यों में से एक है। मैं इस विकास दर को बनाए रखने में, इसे और अधिक जीवंत और स्व–सृजनात्मक बनाने में आपके सहयोग की अपेक्षा करता हूँ। इसलिए मैं आप सभी उपस्थित सदस्यों का आह्वान करता हूँ कि आप बिहार के विकास में सक्रिय साझीदार बनें।

जापान और भारत के बीच के द्विपक्षीय संबंध हमेशा से सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण रहे हैं। विगत कुछ वर्षों में ये संबंध और अधिक प्रगाढ़ हुए हैं। समान मूल्यों और परंपराओं की ठोस नींव के आधार पर दोनो देशों के राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक हितों का अभिसरण हुआ है। साथ ही शांति, सुरक्षा और विकास के समकालीन मुद्दों पर भी सर्वसम्मति बनी है। समान सामरिक उद्देश्यों को आगे बढ़ाने तथा उसे अगले स्तर तक ले जाने के लिए दोनों राष्ट्रों ने साथ मिलकर काम करने का निर्णय लिया है। हमारे संबंध उन्मुक्त, खुल और समृद्ध विश्व के लिए मूल्य–आधारित साझेदारी के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता पर आधारित हैं।

जापान और भारत के बीच मैत्री का एक लम्बा इतिहास रहा है जिसकी मजबूत जड़ें आध्यात्मिक लगाव और मजबूत सांस्कृतिक और सभ्यतागत संबंधों में निहित है। जापान के साथ भारत के सीधे सम्पर्क का पहला साक्ष्य नारा प्रान्त के तोदाईजी मंदिर से जुड़ा है, जहाँ 752 ई0 में भगवान बुद्ध की विशालकाय मूर्ति का पवित्रोकरण एक भारतीय बौद्ध–भिक्षु, बोधिसेन द्वारा किया गया था। दोनों राष्ट्रों के बीच अनौपचारिक रिश्ते और सांस्कृतिक आदान–प्रदान अत्यंत प्राचीन काल से रहे हैं। इसका एक बेहतरीन उदाहरण जापान में मिथिला चित्रकला का संग्रहालय है। भारत से हजारों मील दूर बिहार के पारंपरिक मिथिला चित्रकला ने जापान में अपना ठिकाना बनाया है। जापान के नोगाता प्रान्त के तोकामाची पहाड़ियों में अवस्थित ''मिथिला संग्रहालय'' जो श्री तोक्यो हसेगावा की देन है, अब 15 हजार उत्कृष्ट मिथिला चित्रकला की धरोहर है।

मैं इस अवसर पर नालंदा विश्वविद्यालय की पुनर्स्थापना में भागीदारी के लिए जापान की सरकार का धन्यवाद करता हूँ। पुनर्स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय की परिकल्पना अंतर–सभ्यतागत संवाद के केन्द्र के रूप में की गयी है। नालंदा विश्वविद्यालय ने जापान के कनाजावा विश्वविद्यालय के साथ अकादमिक सहयोग के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किया है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भारत जापानी सहयोग का एक और सुन्दर उदाहरण बिहार संग्रहालय है। अंतर्राष्ट्रीय निविदा के माध्यम से चयनित, प्रसिद्ध जापानी वास्तुकला फर्म 'माकी एंड एसोसिएट्स' ने विश्वस्तरीय बिहार संग्रहालय के वास्तुशिल्प संरचना की परिकल्पना की है। यह बिहार संग्रहालय को भारत के इतिहास और भविष्य के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करने में वास्तुकार के दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति है।

बिहार भारत के पूर्व में अवस्थित एक राज्य है। 94,163 वर्ग किमी क्षेत्रफल के साथ यह भारत का 13वां और जनसंख्या के दृष्टिकोण से तीसरा सबसे बड़ा राज्य है। यहाँ की जलवायु सामान्य रूप से सब–ट्रॉपिकल है, गर्मियों में गर्म और सर्दियों में सर्द। यहाँ की भूमि उपजाऊ है जिससे होकर हिमालय से निकलने वाली गंगा और उसकी सहायक नदियाँ बहती है। बिहार मुख्यतः तीन विशिष्ट सांस्कृतिक क्षेत्रों मगध, मिथिला और भोजपुर का संगम स्थल है। भारत की सबसे अधिक युवाओं की

आबादी वाले राज्यों में से एक बिहार देश के मानव और बौद्धिक संसाधन का केन्द्र माना जाता है। बिहारी छात्रों की शैक्षणिक उत्कृष्टता उनके भाषा और गणित में असामान्य ज्ञान को प्रदर्शित करती है, जो शैक्षणिक प्रणालियों में एक दुर्लभ मेल है।

हालांकि बिहार अभी भी एक विकासशील राज्य है, इसने पिछले 12 वर्षों में महत्वपूर्ण बदलाव देखा है। इस अवधि में बिहार में स्थिर मूल्य पर विकास दर करीब 10 प्रतिशत रही है, जो अधिक दरों से बढ़ने वाले भारतीय राज्यों में से एक है। यह परिणाम राज्य सरकार द्वारा प्रारम्भ किए गए व्यापक स्थानीय सुधार कार्यक्रमों से संभव हुआ है। इस पहल में लोक वित्त प्रबंधन और सरकारी व्यय में सुधार, बुनियादी ढांचा के निर्माण और मानव संसाधन के विकास में सार्वजनिक निवेश शामिल है। राज्य सरकार के विकास के एजेंडा पर आधारित बिहार का पुनरूत्थान और जापान के मेजो पुनर्स्थापन में काफी समानताएँ हैं।

राज्य सरकार बिहार में आधारभूत ढांचे के विकास के लिए तेजी से काम कर रही है। राज्य सरकार ने राजधानी पटना को राज्य के दूरस्थ क्षेत्रों से जोड़ने का संकल्प लिया, ताकि अधिकतम छः घंटे के भीतर राजधानी तक पहुँचा जा सके। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के बाद अब समय–सीमा घटाकर पांच घंटे की गयी है। बढ़ते सड़क नेटवर्क के बेहतर रख–रखाव के लिए राज्य सरकार ने सड़क अनुरक्षण नीति भी बनाई है। राष्ट्रीय राजमार्गों, राज्य राजमार्गों, मुख्य जिला सड़कों और ग्रामीण सड़क के विशाल नेटवर्क के साथ–साथ स्वर्णिम चतुर्भुज राजमार्ग, पूर्व–पश्चिम कॉरिडोर और प्रस्तावित पूर्वी समर्पित फ्रेट कॉरिडोर राज्य से होकर गुजर रहा है, जो राज्य को प्रमुख औद्योगिक केन्द्रों, कृषि बाजारों, सांस्कृतिक केन्द्रों और महत्वपूर्ण बंदरगाहों से जोड़ते है।

बौद्ध सर्किट की सम्पर्कता बढ़ाने के उद्देश्य से, दो 4 लेन राष्ट्रीय राजमार्गों को जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जेआईसीए) द्वारा वित्त पोषित किया जा रहा है। पहला राज्य की राजधानी पटना से बोधगया–डोभी (एनएच 83) है जबकि दूसरा गया से राजगीर और नालंदा होते हुए बिहारशरीफ (एनएच 82) है। दोनों परियोजनाओं का निर्माण चल रहा है जो 2019 तक पूरा होगा।

जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी बिहार में ''वन प्रबंधन और प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए क्षमता विकास'' कार्यक्रम के साथ भी जुड़ा हुआ है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत जेआईसीए ने बुनियादी ढांचे के साथ–साथ क्षमता विकास के लिए वित्तपोषण किया है।

जापान को बिहार में क्यों निवेश करना चाहिए?

बिहार में नए युग की औद्योगिक एवं तकनीकी क्रांति के लिए प्रचुर संसाधन और संभावनाएँ है। व्यावहारिक ज्ञान और नवाचारी सोच के प्रति स्वाभाविक आकर्षण से परिपूर्ण यहाँ के युवाओं की प्रतिभा इस राज्य का बल है। यहाँ के लोगों में परिस्थिति के साथ सामंजस्य करते हुए विकसित होने की अद्भुत क्षमता है जो उन्हें परिवर्तनकारी औद्योगिक उत्पादन के लिए समर्थ बनातो है।

पूर्वी और उत्तरी भारत के विशाल बाजारों तथा कोलकाता, हल्दिया और पारादीप जैसे बंदरगाहों की निकटता और पड़ोसी राज्यों के कच्चे माल के स्रोतों और खनिज भंडार तक पहुंच के कारण बिहार को भौगोलिक स्थिति का विशिष्ट लाभ मिलता है। इसके साथ–साथ आकर्षक औद्योगिक नीति और किफायती श्रम संसाधन, बिहार में इलेक्ट्रोनिक तथा ऑटोमोबाईल विनिर्माण केन्द्रों की स्थापना के लिए उत्कृष्ट संभावना उपलब्ध करात है। हम इस अवसर पर अग्रणी जापानी कंपनियों को बिहार में घरेलू और निर्यात बाजारों के लिए उत्पादन सुविधा स्थापित करने हेतु आमंत्रित करते हैं। 0

जापानी संगठनों का सकारात्मक सहयोग बिहार को ज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित परिवर्तनकारी अर्थव्यवस्था स्थापित करने में मदद कर सकता है। इससे ना सिर्फ औद्योगिक परिपेक्ष्य में अंतर्राष्ट्रीय रूप से जानी–मानी जापानी संस्थागत दक्षता प्राप्त होगी, बल्कि यह बिहार को ज्ञान–आधारित समाज के रूप में स्थापित करने में भी सहायक होगा। इस साझेदारी से ना केवल विकास की असीम संभावनाएँ सृजित होगी बल्कि यह सभी पक्षों के लिए सभी मायनों में लाभकारी सिद्ध होगा। इसका अभूतपूर्व प्रभाव सामाजिक प्रक्षेत्र पर भी होगा और यह विकास का एक अलग मॉडल प्रस्तुत करेगा।

बिहार में बुनियादी ढांचे क सृजन और मानव क्षमता के विकास, विशेषकर तकनीकी सहयोग, औद्योगिक साझदारी, प्रभावी सेवा प्रणाली और शैक्षिक अनुसंधान के विकास में निवेश करने हेतु हम आपको आमंत्रित करते हैं। जापान और बिहार के बीच यह अनूठी साझेदारी सामाजिक–आर्थिक सहयोग का एक बेहतरीन उदाहरण हो सकती है।

बिजली की व्यापक उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए राज्य ने अपनी उत्पादन क्षमता के विस्तार के साथ–साथ सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों से विद्युत आपूर्ति हेतु पर्याप्त करार किए है। इसके अतिरिक्त उपभोक्ताओं के लिए निर्बाध गुणवत्तापूर्ण बिजली की आपूति सुनिश्चित करने के लिए ट्रांसमिशन, सब ट्रांसमिशन और डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क को बेहतर बनाया जा रहा है। इसके लिए राज्य सरकार द्वारा 350 अरब रूपये से अधिक की राशि खर्च की जा रही है। जापान बिहार में अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की संभावनाओं पर विचार कर सकता है।

बिहार सरकार न्याय के साथ विकास के लिए प्रतिबद्ध है। बिहार मुख्य रूप से एक कृषि प्रधान राज्य है लेकिन राज्य के समावेशी आर्थिक विकास में द्वितीयक क्षेत्र अर्थात उद्योग के योगदान का भी समान महत्व है। राज्य सरकार ने बिहार में निवेश का वातावरण बनाने हेतु कई उपाय कर त्वरित औद्योगिक विकास की परिकल्पना की है।

बिहार में वर्तमान में औद्योगिक और सेवा–क्षेत्र में दो स्तरों पर विशिष्ट हस्तक्षेप की आवश्यकता है। सेवा प्रतिपादन, तकनीकी ज्ञान, परिचालन और वित्तीय प्रबंधन तथा प्रक्रियाओं में सुधार हेतु प्रशिक्षण और क्षमता का विकास पहला स्तर हो सकता है। भौतिक ढांचे की स्थापना और नये निवेश तथा संयुक्त उद्यमों के माध्यम से औद्योगिक क्षेत्र में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप दूसरा स्तर हो सकता ह। इन दोनों स्तरों पर सहयोग को हम आमंत्रित करते हैं।

राज्य में त्वरित औद्योगिक विकास के अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए राज्य सरकार ने औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन नीति, 2016 तैयार की है। इस नीति के मार्गदर्शक सिद्धांत आवश्यक आधारभूत संरचनाओं का विकास, मुख्य प्रक्षेत्रों को प्राथमिकता, कौशल विकास, सहायता के लिए विशिष्ट पैकेज तथा राज्य में संतुलित क्षेत्रीय विकास है। उद्यमियों के लिए प्रभावी कार्यान्वयन, निगरानी और शिकायत निवारण के लिए नीति में स्पष्ट प्रावधान हैं। इसके अलावा इस नीति के सकारात्मक कार्यान्वयन के लिए राज्य सरकार ने बिहार औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन अधिनियम एवं नियमावली लागू की है।

राज्य में खाद्य प्रसंस्करण, कपड़े, वस्त्र और चमड, सूचना प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित सेवाएं और इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम डिजाइन और विनिर्माण को उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्रो में रखते हुए इनके क्लस्टर आधारित विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है। इन प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में निवेश और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए सक्रिय रूप से विचार किया जा सकता है।

बिहार भारत में बागवानी फसलों के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है। गंगा की उपजाऊ मिट्टी, समृद्ध जल संसाधन, उपयुक्त कृषि–परिस्थितिकी और प्रचुर श्रम संसाधन के कारण यह राज्य खाद्यान्न का भी प्रमुख उत्पादक है। कुल जीएसडीपी में कृषि क्षेत्र का हिस्सा लगभग 18 प्रतिशत है, जबकि लगभग 76 प्रतिशत लोग अपनी आजीविका के लिए कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों पर निर्भर हैं। बिहार की इस क्षमता को बढ़ाने के लिए खाद्य प्रसंस्करण एवं जनित उत्पादों के अंतर्राष्ट्रीय विपणन को प्रोत्साहित किया जा सकता है। बिहार के मेहनती मानव संसाधन और कृषि सामर्थ्य के विकास के लिए हम जापान को निवेश और तकनीकी सहयोग के लिए आमंत्रित करते हैं।

बिहार में पर्यटन को समृद्ध बौद्धिक विरासत के साथ यहाँ की समकालीन कला और कृषि आधारित संस्कृति के संयोजन से बढ़ाया जा सकता है। ग्रामीण और कृषि क्षेत्रों पर बल देते हुए लोगों के बीच आपसी सम्पर्क और स्थानीय भ्रमण के माध्यम से एक अनोखा पर्यटकीय अनुभव बनाने का अवसर है। उदाहरण के लिए बोधगया के सांस्कृतिक अनुभव के लिए आए पर्यटकों को नालंदा की सब्जी की खेती और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के भ्रमण के साथ जोड़ा जा सकता है। इसी प्रकार बौद्ध सर्किट में लंबे समय तक ठहरने की सुविधा वरिष्ठ नागरिकों के सांस्कृतिक उत्सर्जन का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान कर सकती है।

बिहार जापान के संदर्भ में क्यों अनोखा है? अपनी बात को रखने के लिए मैं एक संस्था के बारे में बताना चाहूंगा– ये है परम पूज्यनीय फूज़ी गुरूजी, जो बौद्ध धर्म के आदर्शों का प्रचार करने भारत आए थे। उन्होंने बिहार भ्रमण के क्रम में राजगीर को सभी पवित्र स्थानों में सबसे पवित्र माना और उन्हे यह ज्ञान हुआ कि 'नमु मिहोहो रेंगे क्यो' के मंत्र का जाप इस धरती पर करने से मोक्ष प्राप्त होगा। उन्होंने गृद्धकूट पर्वत, जहां भगवान बुद्ध ने अपने शिष्यों को उपदेश दिया था, के सामने राजगीर में विश्व शांति स्तूप की स्थापना की। राजगीर का यह शांति स्तूप बिहार का सबसे व्यस्ततम पर्यटक स्थलों में से एक है। यह जापान और भारत के लोगों के बीच पारस्परिक विश्वास और दृढ़ मैत्री का प्रतीक है और बिहार को जापान के लिए एक अनोखा गंतव्य बनाता है।

आदश और दर्शन में बिहार ने स्वयं को हमेशा जापान के साथ पाया है। बिहार में बुद्ध सर्किट पर्यटन का एक मुख्य आधार है, जिसमे बोधगया (यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल), राजगीर, नालंदा महाविहार (यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल) लौरिया नंदनगढ़, अरेराज, केसरिया, विक्रमशिला और जहानाबाद जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल शामिल है। पर्यटन क्षेत्र में आतिथ्य, परिवहन, यात्रा सेवाएँ, बैठक, सम्मेलन और प्रदर्शनियों की सुविधाएं, प्रशिक्षण संस्थाएँ और पर्यटकीय सुविधाओं में निवेश के लिए प्राथमिकता दी जा रही है। बिहार में अवस्थित बौद्ध स्थलों पर आधुनिक होटलों के निर्माण हेतु हम जापान को आमंत्रित करते हैं।

मैं इस अवसर पर पटना–गया–बोधगया–राजगीर–नालंदा के बीच तीव्र गति के रेल लिंक जो गया एयरपोर्ट एवं बिहटा स्थित पटना के एयरपोर्ट को भी जोड़े, को विकसित करने के लिए वित्तीय और तकनीकी सहायता का जापान से अनुरोध करता हूँ।

जापान की भूकंप, ज्वालामुखी और सुनामी जैसी आपदाओं से बचाव की तैयारी और चेतावनी प्रणाली विश्व में सबसे अच्छी मानी जाती है। बिहार को जापान के इस ज्ञान, क्षमता और अनुभवों से आपदा पूर्व तैयारी, प्रबंधन और जोखिम न्यूनीकरण में व्यापक सहायता मिल सकती है। जोखिम न्यूनीकरण हेतु सेंडई, जापान में मार्च 2015 में आयोजित तृतीय विश्व सम्मेलन की अवधारणाओं को आत्मसात करते हुए आपदा जोखिम न्यूनीकरण रोड मैप (2015–2030) तैयार करने वाला बिहार भारत का पहला राज्य है।

अंत में मैं पुनः दोहराना चाहूँगा कि –

यद्यपि बिहार एक विकासशील राज्य है, यहाँ निवेश के असीम अवसर हैं। बिहार की समृद्ध ऐतिहासिक विरासत एवं धरोहर है। यह राज्य उपजाऊ भूमि, पर्याप्त जल–संसाधन, मध्यम जलवायु एवं मेहनती लोगों से सम्पन्न है। ज्ञान की भूमि के अपने ऐतिहासिक विरासत के साथ यहाँ की युवा आबादी जीवंत एवं प्रतिभावान है। बिहार और जापान एक लोकनीति साझा करते हैं, जो शांति, सौहाद, परंपरा तथा संस्कृति के गहरे आंतरिक मूल्यों पर आधारित है। हम दोनों के बीच बौद्ध धर्म एक स्थाई सेतु का काम करता है जो इस साझीदारो को आदर्श बनाता है। मैं आप सभी से इस संबंध को सहयोग और मित्रता के उच्चतर स्तर पर ले जाने का आह्वान करता हूँ।

मुझे अपनी बात रखने का अवसर देने एवं मुझे धैर्य से सुनने के लिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूँ।

धन्यवाद